B.Ed. 1st Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2019-2020/2021 (Assistant Professor)
Subject – Pedagogy of Social Science **Department of Education**
Course – 7 (A) /Unit – 3(b) **A.N. D. College**
Shahpur Patory
(Samastipur)

Topic – एक अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताएँ

(Characteristics of a Good Teaching Method)

Lecture No. - 31

एक आदर्श शिक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए -

1. **विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सहायक** – एक अच्छी शिक्षण विधि विद्यार्थियों में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करती है। इससे विषय अधिक स्पष्ट एवं हृदयग्राही हो जाता है।

2. **अनुशासन संबंधी समस्याओं से मुक्त रहने में सहायक** – जैसा कि उपर कहा गया है, अच्छी शिक्षण विधि से विद्यार्थी विषय में रूचि लेने लगते हैं। फलतः अनुशासन संबंधी समस्याओं का स्वतः समाधान हो जाता है।

3. **क्रियाशीलता** - एक अच्छी शिक्षण विधि विद्यार्थियों की अधिकपम इन्द्रियों का उपयोग करती है। बालक निष्क्रिय श्रोता न रहकर शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में पूर्णतया सक्रिय रहकर अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं। वे स्वयं के अनुभवों के आधार पर अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सफल होते हैं।

4. **मनोवैज्ञानिकता** - एक अच्छी शिक्षण विधि में विद्यार्थियों की रूचियों , आवश्यकताओं, क्षमताओं, योंग्यताओं, व्यक्तिगत विभिन्नताओं, उनके मानसिक स्तर तथा मूल प्रवृत्तियों का पूरा ध्यान रखने का प्रयास होता है।

5. **विषय शिक्षण के उद्दश्यों की प्राप्ति में सहायक** – शिक्षण विधि तभी अच्छी मानी जाती है जब विषय के उद्देश्यों जैसे - उत्तम नागरिकता की शिक्षा , मानवीय व जनतांत्रिक मूल्यों का विकास, समाज की प्रगति में योगदान आदि की प्राप्ति सहज एवं प्रभावपूर्ण ढ़ंग से होती है।

6. **व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक** – एक अच्छी शिक्षण विधि विद्यार्थी के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्षों के विकास में सहायक होती है।

7. **व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक** – अच्छी शिक्षण विधि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण कर उन्हें उनकी अपनी गति से आगे बढ़ने में सहायता करती है।

8. **मितव्ययी** - अच्छी शिक्षण विधि समय, धन, शक्ति आदि के उपयोग की दृष्टि से कम खर्चीली होती है

9. **सामाजिक गुणों का विकास** – शिक्षण विधि के अच्छी कहलाती है जब शिक्षक की भूमिका मित्रवत एवं सहयोगी परामर्शदाता जैसी होती है। ऐसा होने पर विद्यार्थियों के मध्य परस्पर सहयोग, उत्तरदायित्व निर्वाह, नियमों का पालन, सामाजिक करने जैसे गुणों का विकास स्वतः होता है।

10. **व्यवहारिकता एवं चेतना का विकास** – पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने एवं विधि के लिए आवश्यक सुविधाओं व स्रोतों के आसानी से उपलब्ध होने पर शिक्षण विधि अच्छे परिणाम देती है

11. **ऐतिहासिक चेतना का विकास** – अच्छी शिक्षण विधि का एक लक्ष्य छात्रों में अपने राष्ट्र व स्थानीय परिवेश के प्रति वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण का विकास करना भी होता है।

शिक्षण-विधि के चयन के समय निम्नांकित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए -

1. शिक्षण-विधि का मनोवैज्ञानिक आधार स्पष्ट होना चाहिए।
2. इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य तथा व्यवहारिक पक्ष को सदैव सामने रखा जाए।
3. शिक्षण-विधि शिक्षक की रूचि के अनुरूप हो।
4. शिक्षण-विधि छात्रों को अभिप्रेरित करे।
5. शिक्षण-विधि कक्षा की वास्तविक परिस्थिति के अनुरूप हो।
6. छात्रों को अधिक से अधिक कार्य करने का अवसर मिलना चाहिए।
7. शिक्षक के द्वारा शिक्षण-विधि के चयन के पश्चात उसके मूल्यांकन का प्रयास हो।

(समाप्त)